International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 25-26

यशपाल और यथार्थवाद

मुल्ला आदम अली
शोध छात्र, हिंदी विभाग, श्री वेन्कटेशवर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

यशपाल का नाम आधुनिक हिंदी साहित्य के कथाकारों में प्रमुख है। ये एक साथ ही क्रांतिकारी एवं लेखक दोनों रूपों में जाने जाते है। प्रेमचंद के बाद हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील कथाकारों में इनका नाम लिया जाता है।

जन्म

यशपाल जी का जन्म 3 दिसंबर 1903 फ़िरोज़पुर छावनी, पंजाब में हुआ। यशपाल के पिताजी का नाम हीरालाल तथा माताजी का नाम प्रेमदेवी था। प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई।

यशपाल ने साहित्य-सृजन की शुरुआत कहानीकार के रूप में की थी। यशपाल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार है। उन्होंने हिंदी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। जैसे – कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मा-कथा, यात्रा साहित्य आदि। उनकी रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

उपन्यास

'झूठा सच: वतन और देश', 'झूठा सच: देश का भविष्य', 'मेरी तेरी उसकी बात', 'देश द्रोही', 'दादा कामरेड', 'मनुष्य के रूप', 'दिव्या', 'अमिता', 'बारह घण्टे', 'अप्सरा का शाप;.

कहानी-संग्रह

'पिंजरे की उड़ान' (1939), 'वो दुनिया' (1941), 'तर्क का तूफ़ान' (1943), 'ज्ञानदान' (1943), 'अभिशप्त' (1944), 'भस्मावृत चिंगारी' (1946), 'फूलों का कुर्ता' (1946), 'धर्मयुद्ध' (1950), 'उत्तराधिकारी' (1951), 'चित्र का शीर्षक' (1952), 'तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ' (1954), 'उत्तमी की माँ' (1955), 'ओ भैरवी' (1958), 'सच बोलने की भूल' (1962), 'खच्चर और आदमी' (1965), 'भूख के तीन दिन' (1968), 'लैम्प शेड' (मरणोपरांत प्रकाशित-1979).

यात्रा-वृत्तांत

'लोहे की दीवार के दोनों ओर', 'राह बीती', 'स्वर्गोद्यान', 'बिना साँप'.

डायरी: 'मेरी जेल डायरी'.

राजनीति/ निबन्ध/ व्यंग्य

'राम राज्य की कथा', 'गाँधीवाद की शव-परीक्षा', 'मार्क्सवाद', 'देखा, सोचा, समझा', 'चक्कर क्लब', 'बात-बात में बात', 'न्याय का संघर्ष', 'बीबी जी कहती हैं', 'मेरा चेहरा रोबीला है', जग का मुजरा', 'मैं और मेरा परिवेश', 'यशपाल का 'विप्लव''.

संस्मरण: 'सिंहावलोकन' (भाग-1, 2, 3, 4)

नाटक: 'नशे-नशे की बात'.

पुरस्कार: 'देव पुरस्कार', 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार', 'मंगल प्रसाद पारितोषिक', 'पद्मभूषण'.

निधन: 26 दिसंबर 1976

यथार्थवाद

यथार्थवाद साहित्य में एक विशेष चिंतन, सृजन पद्धति के रूप में अवतरित हुआ है। यथार्थवाद आंदोलन के रूप में ही चला है। इस आंदोलन की रचनाओं की परख करने से यह स्पष्ट होता है कि यथार्थवाद का आविर्भाव अभिजात्यवाद तथा स्वच्छंदतावाद की प्रति क्रिया के रूप में हुआ है। अपनी अभिव्यक्ति में वह उच्च समाज की अपेक्षा शुद्र को, राजा की तुलना रंक को, कुलीन की तुलना अपेक्षा नीच को, अतीत वर्तमान को महत्त्व देता हुआ प्रस्तुत होता है।

यथार्थवाद क्या है

यथार्थवाद के लिए अंग्रेजी का शब्द 'रियलिज्म' है। 'रियल' शब्द का ग्रीक भाषा के रीस शब्द से बना है, जिसका अर्थ है 'वस्तु'। अतः रियल का अर्थ होता है वसु संबंधी। यही कारण है रियलिज्म (यथार्थवाद) वस्तु के अस्तित्त्व से संबंधित यह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु सत्य है और प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष का अनुभव हमें इंद्रियों से होता है। वास्तव में यथार्थवाद एक भौतिक वादी दर्शन है। वस्तु को वास्तविक अथवा यथार्थ मानने के कारण ही इस विचारधारा को वास्तववाद अथवा यथार्थवाद की संज्ञा दी जाती है। यथार्थवाद जगत को मिथ्या कहनेवाली भावना विरोधी स्वर है।

21 वीं सदी भूमंडलीकरण से उत्पन्न प्रौद्योगिक की क्रांति को प्रस्तुत करनेवाली सदी रही है, जिसने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से ज्ञान विज्ञान के द्वारा मानव समाज के लिए अप्रतिम और अद्भुत भौतिक सुख सुविधाओं का अम्बर लगा दिया है, इतना ही नही एक नयी संस्कृति को जन्म दिया है जिसे उपभोक्तावादी संस्कृति कहा जाता है, जिसने मनुष्य में भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति की असीमित लालसा को जन्म दिया है और इसने मानव जीवन को सम्मुख एक काल्पनिक स्वर्णिम और संसार की रचना की है जिसकी प्राप्ति और उपभोग की पिपासा ने मनुष्य को जीवन मूल्यों और

नैतिकता के स्तर से भटका दिया है।

यथार्थ के कई रूप या भेद होते है जैसे- प्राकृतिक यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद, मार्क्सवादी यथार्थवाद आदि। ये सभी भेद यथार्थ को देखने के अलग-अलग दृष्टिकोण, आधार या सिद्धांत है। इनमें से किसी भी रूप को लिया जाय उसमें जीवन का ठोस और खुरदार रूप सामने आ जाता है।

साहित्य के क्षेत्र में यथार्थवाद वह प्रवृत्ति है जिसमें वस्तुओं और व्यक्तियों के वास्तविक स्वरूप का पारस्परिक सम्बंधों का तथा उनके गुण-दोषों का सही वर्णन किया जाता हैं। डॉ.भाऊ परदेशी के अनुसार "जीवन जैसा है उसे वैसा ही प्रस्तुत करना यथार्थवाद है।"- यथार्थवादीयों ने मानव को मानव के रूप देखा है।

यशपाल जी मूलत

मार्क्सवादी चेतना के लेखक है। यशपाल का उपन्यास साहित्य पूंजीवादी समाज व्यवस्था की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियों का यथार्थ दस्तावेज है। यशपाल अपने चरित्रों में वर्ग-चेतना दिखाते है। उन्हें शोषण और सामाजिक जनता के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार करते है और कर्मवाद का पाठ पढ़ाकर विभिन्न प्रकार की विसंगतियों और विकृतियों के विरुद्ध जूझने के लिए शक्ति प्रदान करते है।

यशपाल का सम्पूर्ण लेखन रूढ़िवाद, धार्मिक अंधविश्वासों को 'दादा कामरेड' और 'झूठा-सच' जैसे उपन्यासों में मध्यवर्ग के स्त्री-पुरुष संबंधों को दर्शाया है। उनमें जो भ्रष्टाचार और दिशा हीनता जैसे तत्त्व का सफल चित्रण किया है।

यशपाल के उपन्यासों में 'दादा कामरेड', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'झूठा-सच (भाग-1,2)', तथा 'मेरी तेरी उसकी बात' तो यथार्थ दर्शन का प्रमाण है।

संदर्भ:

1. यथार्थवाद और उसकी समस्याएँ– यशपाल
2. समाजवादी यथार्थवाद और हिन्दी कथा साहित्य– डॉ. प्रेमलता जैन
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र के मानदंड– डॉ. भाऊ परदेशी